Module No. 7

पारीक परिवार : हमारा घर

Duration : 03.50

Transcribed words : 579

- संगीत -

00.09 कमलेश पारीक : इस परकोटे में पूरी बाऊंड्ररी वॉल थी, पाँच बीघे जमीन पे... चारों तरफ बुर्जियाँ बनी हुईं थी... जब हमारी शादी हुई थी, हमने भी वो सब कुछ देखा है...

00.19 ऋषि नारायण पारीक : देखिये, ये जो आम का पेड़ आप देख रहे हैं, ये बहुत ही प्राचीन है, बहुत ही पुराना है... मेरे पिताजी ने ये लगाया था... कई आम के पेड़ थे... उनमें से ये एक दो आम के पेड़ बचे हैं... इसमें कलमी आम आते हैं.. और, करीब,मतलब, एक, एक सीजन में करीब, मैं गिनती तो नहीं है, मगर बहुत आम आते हैं... और ये बहुत ही घना पेड़ है... और इसके नीचे हम, हमने अपना बचपन गुजारा है... और यहाँ खेलते थे... इस पे चढ़ जाते थे... और कई आम के पेड़ हैं... उधर भी हैं... वो दशहरी आम आ जाते हैं... और बहुत ही मीठे होते हैं... और हमने इनका काफी लुफ़्त उठाया है बचपन से...

01.06 (मंदिर की घंटी की आवाज)

01.10 ऋषि नारायण पारीक : ये उसी समय का मंदिर बना हुआ है जबकि ये बोहरा जी का बाग बना था... जब बहुत छोटा था, मेरे फादर यहाँ पूजा, पूजा किया करते थे... हालाँकि पुजारी थे... मगर वो बैठ के... और हम लोगों का भी रूटीन ये होता था कि स्कूल जाने के पहले मैं, मेरे फ़ादर और पंडित जी के साथ यहाँ पर पूजा में सम्मिलित हुआ करता था...

01.35 ऋषि नारायण पारीक : हमारे यहाँ जो गणेश जी की मूर्ति है, आप और कहीं देखेंगे तो गणेश जी की सूँड जो है, जो बाईं तरफ होती है... हमारे यहाँ जो गणेश जी स्थापित, इस मंदिर में हुये हैं, उनकी सूँड दाईं तरफ है... ये बहुत ही कम मिलते हैं... और ये एक विशेष बात है... और इस, इन गणेश जी का ये बताया है कि ये, इस मूर्ति की पूजा नित्य, रोज, समय से होनी बहुत जरूरी है... और उसी परम्परा को हम निभाते हुये अभी तक, रोज पूजा करते हैं... पहले (मंदिर में घंटी बजने की आवाजें) मेरे पिताजी पूजा किया करते थे, पंडित पूजा किया करते थे... और मैं भी उसका अपने सामर्थ्य के अनुसार निर्वहन करता आ रहा हूँ...

02.28 ऋषि नारायण पारीक : देखिये, ये हमारा अध्ययन कक्ष है... यहाँ पर बैठ के हम पढ़ाई करते हैं... अध्ययन करते हैं... मनन करते हैं... मंदिर के साथ का ये भजन करने का स्थान हुआ करता था, जिसको बरांडा बोलते हैं... और इसके साथ ही ये जो, ये वाली जगह है, ये कोठा हुआ करता था, स्टोर मंदिर का, जिसको हम स्टोर कह सकते हैं, वो, वो हुआ करता था... और इधर आते हैं जो भी हमारे मेहमान आते हैं, वो, यहाँ बैठ के हम उनसे बातचीत करते हैं... उनकी मेहमान नवाजी करते हैं... और ये हमारे खाना खाने का स्थान है... यहाँ आते हैं हम... डेली भी यहीं खाते हैं... खाना खाते हैं, और जो मेहमान वगैरह आते हैं, वो भी यहीं पर खाना खाते हैं... और ये ऊपर दो कमरे बने हुये हैं, दो बच्चों के... ये ऊपर जाने की सीढ़ियाँ हैं...

03.25 ऋषि नारायण पारीक : आईये अब मैं अंत में आपको अपना शयनकक्ष दिखा रहा हूँ... यहाँ से दिन चालू होता है और यहीं दिन का ऐण्ड होता है... वापस फैक्ट्ररी से आ के और यहाँ पर आराम करते हैं... और टी.वी. देखते हैं... कुछ अध्ययन करते हैं... और फिर दूसरे दिन का इंतजार करते हैं... सुबह फिर दिनचर्या चालू हो जाती है...